रविवार, दिनाँक **16-07-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दी रचना है अति भारी, महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

जग मग जग मग हो रही है, दासी चरणां तों जावे वारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, सूरत की छवि न्यारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

रघुनाथ जी दे गल बैजन्ती माला साजे, नाल सोहवन बलधारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

रघुनाथ जी नूं लगदे महाबीर जी प्यारे, सारी सृष्टि दे हैन सितारे।

हैन मेरे गदाधारी, महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

सोहणे मन्दरां विच रघुनाथ जी साजन, नाल सोहवे सीता प्यारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

रघुनाथ जी दे चरणां विच महाबीर जी सोहवन, संग लक्ष्मण ब्रह्मचारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

हनुमान जी दे गल रघुनाथ जी दी माला साजे, सेवक रघुनाथ जी दे भारी,

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

दिन रात दासी तुहाडे चरणां विच राहवे, मेहर महाबीर जी दी सारी।

महाबीर जी दी रचना है अति भारी।।

सजनों सच्चेपातशाह जी ने इस भजन द्वारा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की महिमा गाते हुए हर विध् प्रभु के प्रति उनके निर्मल प्रेम व ताकत का वर्णन किया है। इस सन्दर्भ में इस निर्मल प्रेम के बल पर उन्होंने जो कुदरत के आवाहन अनुसार महाबीर सत्संग सभा की स्थापना करने के प्रति परोपकार दिखाया, वह अपने आप में अद्‌भुत मिसाल है। सजनों यहाँ जानो कि हम आत्म-विस्मृत इन्सानों को पुनः आत्म-स्मृति में लाने के लिए महाबीर सत्संग सभा की स्थापना कुदरत की विशेष दात है। इस तथ्य के दृष्टिगत हमने महाबीर सत्संग सभा की स्थापना के महत्त्व को जानना है और इस बात को समझना है कि जहाँ भी महाबीर सत्संग सभा का नीतिबद्ध कार्यक्रम चल रहा होता है, वहाँ कोई भी विघ्न बाधा रुकावट पैदा नहीं कर सकती क्योंकि यह सब कुदरत का खेल है। कुदरत ही यह खेल रचाती है और फिर कुदरत ही अपने आप रास्ता बनाती है जैसा कि गोजरे में भी हुआ। वहाँ भी चाहे वक्त अनुसार जो भी उलटा-पुलटा होता रहा, पर फिर भी सत्संग वैसे ही चलता रहा। चाहे कर्फ़्यू लगा होता था, चाहे दँगे होते थे फिर भी ऐसे हालातों में भी सजन मौत से निर्भय होकर सत्संग में आते रहते थे। सजनों यह उन सजनों का अटल विश्वास जनाता है। अब जहाँ अटल विश्वास होता है वहाँ विजय तो प्राप्त होती ही होती है। सजनों आपको भी इस बात से शिक्षा लेनी है कि चाहे कुछ भी हो जाए, आपको भी इसके प्रति सतर्क व मज़बूत रहना है, कदाचित कमज़ोर नहीं पड़ना यानि हारना नहीं। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से कीर्तन सुनोः-

(महाबीर जी के मुख दे शब्द)

राम पछानन वालियो, राम रूप ही जान, रामा राम रूप ही जान।

राम रम रिहा हर अन्दर, राम राम श्री राम, सियापति रामचन्द्र जी की जय।।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।

जो कुछ करुं सो मैं करुं, दूसरा करे न कोय रामा दूसरा करे न कोय।

चरण शरण श्री राम जी दी, कारज सफला होय, सियापति रामचन्द्र जी की जय।।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।

नाम ध्यान बक्षूं मैं रस्ता बताऊं निष्काम, रामा रस्ता बताऊं निष्काम।

चरण शरण श्री राम जी दी मिलसन श्री भगवान, सियापति रामचन्द्र जी की जय।।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।

जिन्हुं प्रेम घनेरड़ा उसदे राहवां संग, रामा उसदे राहवां संग।

चरण शरण श्री राम जी दी चढ़े स्वाया रंग, सियापति रामचन्द्र जी की जय।।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।

दर्शन पावे बक्षंद दा प्रीति करे विशेष, रामा प्रीति करे विशेष।

चरण शरण श्री राम जी दी, ओदी लीला देखे अनेक, सियापति रामचन्द्र जी की जय।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।।

प्रेम उजला होंदियां उजला होवे सिंगार, रामा उजला होवे सिंगार।

चरण शरण श्री राम जी दी, जन्म लवे संवार, सियापति रामचन्द्र जी की जय।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।।

प्रेम होवे जैंदा उजला प्रेम ही मेल कराये, रामा प्रेम ही मेल कराये।

चरण शरण श्री राम जी दी प्रेम ही जोड़ बनाये, सियापति रामचन्द्र जी की जय।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।।

जेहड़ा राहवे संग असाडड़े ओन्हुं मुशकलताई न होय, रामा मुशकलताई न होय।

चरण शरण श्री राम जी दी, ओहदा अन्त सहाई होय सियापति रामचन्द्र जी की जय।

राम भजो भज लौ श्री राम, राम भजो भज लौ श्री राम।।

सजनों यह वैराग्य अवस्था का कीर्तन है। इसके अन्तर्गत प्रेम का महत्त्व जनाया गया है। सबसे पहले तो इसमें कहा गया है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जो भी नाम-युक्ति आपको प्राप्त हुई है, उस युक्ति के अनुसार नाम की रटन इस तरह से लगाओ कि आपका अपने इष्ट के प्रति प्रेम इतना घना हो जाए कि आपकी सुरत जगत की ओर भटकना या उलझना बन्द कर दे। याद रखो प्रेम जितना गहरा होता जाएगा, उतना ही

विशेषता को प्राप्त होता जाएगा और प्रभु को स्वीकार्य हो जाएगा। आशय यह है कि सुरत शब्द का आपस में तालमेल बनता जाएगा और आपका ख़्याल प्रभु संग रहना आरम्भ कर देगा। इस तरह परस्पर बातचीत द्वारा ख़्याल ईश्वरीय गुणों का अनुकरण करना आरम्भ कर देगा। ऐसा करने से उन गुणों के प्रभाववश उसके प्रेम का स्वरूप बदल जाएगा और बिल्कुल साफ व उजला हो जाएगा। इस तरह हर दोष की गन्दगी की भीतर से सफाई हो जाएगी और हर तरफ से ख़्याल हटकर निर्मल हो जाएगा। जब ख़्याल निर्मल हो गया तो फिर ठीक वैसे ही इष्ट का साक्षात्कार हो जाएगा जैसे निर्मल जल में अपना स्वरूप निगाह आता है।

इस प्रकार इस परम पुरुषार्थ द्वारा सुरत अपने हृदय/चित्त/आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार कर परमात्मा से मेल खा जाती है। कहने का आशय यह है कि प्रेम ही मेल कराता है और इसी के द्वारा सुरत अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाती है। यह सब सुनने के पश्चात आपके लिए बनता है कि इस कीर्तन में विदित सन्देश पर विचार करो और जानो कि सुरत कैसे कदम-कदम पर आगे बढ़ती हुई ईश्वरीय रंग में रंगी जाती है और समरूप हो एकरूप हो जाती है।

सो सजनों यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण सन्देश है, अपने ख़्याल को यकदम पलटा खवाने का और सँवारने का। अन्य शब्दों में यह अपने बहिर्मुखी ख़याल को अन्तर्मुखी बनाने की साधना है ताकि सुरत ईश्वरीय रंग में रंग एकरूप हो जाए और परमात्म नाम कहाए। इस उपलब्धि हेतु मात्र प्रेम के चार कदम ही तो बताए हैं। इतना करने से ही आप चार युगों से ऊपर उठ सकते हो। इसके अतिरिक्त इस कीर्तन में परमात्मा यह भी कहते हैं कि हे मानव/जीव, जान कि इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है उसका कर्त्ता मैं ही हूँ। अतः इस बात को स्मृति में रखते हुए जीवन में जो कुछ भी कर, वह मेरी आज्ञा अनुसार मेरे निमित्त ही कर अर्थात इस संसार का मालिक न बन क्योंकि यह कुल ब्रह्माण्ड मेरी मलकियत है, इसमें अपना दखल मत दे। जानो सजनों यह संकल्प-रहित अवस्था में समर्थ बने रहने की मंगलकारी बात है। सो प्रयास कर और समझदार बन जा।

इस सन्दर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि आज तक कुछ नहीं कर पाए तो कम से कम अब तो समझदार बन जाओ क्योंकि कुदरत ने जो गत दिनों में खेल रचा, उसके बावज़ूद भी आपको कुदरत की वाणी सुनने समझने का मौका मिला अतः इसे अपनी किस्मत मानो। इसका सीधा सा आशय यह भी है कि कुदरत चाहती है कि इस द्वारे पर होने के नाते आप अपनी किस्मत बना लो। आज तो कुदरत का यह कहना मान लो और अपनी मनमत लगाकर इधर-उधर भटकना बन्द कर दो। याद रखो यह भागम भाग आपको थका देगी और तोड़कर रख देगी। इसके विपरीत यदि आप द्वारे की नीति अनुसार चले तो असीम सुख-शान्ति को प्राप्त हो जाओगे। इस सन्दर्भ में हम देखते हैं कि कई सजन अभी भी मन-गढ़ंत रीति-रिवाज़ों में उलझे हुए हैं। ऐसे सजनों से हम पूछते हैं कि यदि वे उन्हीं में फँसे रहना चाहते हैं तो फिर द्वारे पर क्यों आते हैं? आपकी उलझना तो स्पष्ट जाहिर करती है कि द्वारे पर आपका कितना विश्वास है। याद रखो सजनों इस द्वारे से सब प्राप्त हो सकता है अतः उस प्राप्ति के हक़दार बनो। इस हेतु द्वारे की नीति-नियमों को गहराई से समझो और फिर सहर्ष उनकी पालना करना आरम्भ कर दो। इस सन्दर्भ में किसी ने भी भावुक होकर नीति विरुद्ध कदम नहीं उठाना यानि ऐसा करने के प्रति कुछ भी करने से अपने आप को रोकना है ताकि सामूहिक शोभा समरस बनी रहे। जानो ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि परमेश्वर कहते हैं:-

नीतियां पकड़ो मेरे सजनों, नीतियां विरुद्ध न चलो इन्सान।

नीतियां वर्ताओ जेहड़ा करदा, उन्हां दी जोत जगे निर्वाण।।

कोई विरला यत्न करे इन्सान, कोई विरला यत्न करे इन्सान।

हनुमान जी दी युक्ति करो प्रवान, नीतियां विरुद्ध न चलो इन्सान।।

विचार शब्द जेहड़ा कर लवे, फिर जित्त ओन्हां दी जान।

कोई विरला यत्न करे इन्सान, कोई विरला यत्न करे इन्सान।।

सजनों कहने का तात्पर्य यह है कि शास्त्र अनुसार चलो और उसके विरुद्ध कदाचित कदम न उठाओ। जानो ऐसा करने में ही आपकी जय है। अब आगे सुनोः-

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

आप हो सारी दुनियाँ दे रक्षक, आप ही हो दुनियाँ दे सहारे।

आप ही हो दुनियाँ दे पालक, आप ही हो सब दे पालनहारे।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

चानणा हुआ उदय, तां मैं प्रकट भया, पाप अन्धेरा अन्धकार हुआ तां मैं गुपट भया।

अन्धेरे में जेहड़ा जेहड़ा ढूंढना चाहवे, ओ इक इक बात नूं पकड़े।।

खालस सोना खोट ना राहवे, जो इक इक बात नूं पकड़े।

चानणा मेरा है कुल दुनियाँ अन्दर, सजन चमके ओ चमक दिखावे।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, मन मन्दिर प्रकाशे, आद अन्त एहो जापे।।

कोने कोने डाली ओ डाली, पत्ते ओ पत्ते व्यापे।

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।।

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता प्रकाशे, जगत जहान हां मै खुद आप भगवान।

जड़ चेतन प्रकाशे सूरज चांद ही ओ जापे, एहो मेरी ब्रह्म सत्ता।।

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता प्रकाशे हाज़रा हजूर, निकट हिवे सजनों, सजनों निवे कोई दूर।

प्रकाश मेरा सारे भूमण्डल, प्रकाश मेरा है ओ जरूर, एहो मेरी ब्रह्म सत्ता।

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।।

इस कीर्तन में परमेश्वर कहते हैं कि अगर जीव मेरा साक्षात्कार करना चाहता है तो अपने हृदय को सदा आत्मज्ञान से प्रकाशित रखे ताकि अज्ञान अन्धकार उसके हृदय में न ठहरे। जानो तभी इन्सान खुद को जान सकता है और अपने यथार्थ को पहचान सजनता का प्रतीक बन सकता है। यहाँ याद रखो कि जिसका हृदय प्रकाशित हो जाता है उस सुरत को प्रभु का साक्षात्कार हो जाता है। अब नियम है, जहाँ ख़्याल वहाँ दृष्टि। आशय यह है कि ए विध् ख़्याल जब आत्म-साक्षात्कार कर लेता है तो दृष्टि फिर संसार के जिस कोने में भी जाती है उसे ईश्वर की सर्वव्यापकता का सत्य समझ में आ जाता है। ऐसा होने पर सभी अपने से लगने लगते हैं यानि मैत्री भाव/सजन भाव जाग्रत हो जाता है। अब जहाँ सजन भाव होता है वहाँ मन फुरनों से आज़ाद हो जाता है और अफुर अवस्था आ जाती है व सत्य पूरी तरह प्रकाशित हो जाता है। यही सत्य फिर वाणी व व्यवहार में उतरता है और सबको शान्ति प्रदान करता है। इस तरह बिगड़ा काम बन जाता है। सो सजनों यह स्वयं में बस थोड़ा सा स्वाभाविक परिवर्तन लाने की बात है। इस स्वाभाविक परिवर्तन को लाने हेतु सजनों जितना भी संसार में उलझ चुके हो, अब वापिस लौट आओ। इसमें उम्र का कोई सवाल नहीं। बाल, युवा, प्रौढ़, वृद्ध सब यह कर सकते हैं और अपनी अक्ल टिकाणे ला सकते हैं। जानो इसके लिए लम्बा कुछ नहीं करना, बस एक दृढ़-संकल्प लेना है कि वह प्रभु अन्दर, बाहर, हर वस्तु में व हर जगह प्रगट है अतः हमें उसे हाजिर-नाजिर मानकर ही इस जगत में परस्पर सजनभाव अनुसार विचरना है। बस इतना करने से हम समभाव-समदृष्टि हो जाएँगे और हमें दिव्य दृष्टि का सबक़ मिल जाएगा। तो यह कोई लम्बी पढ़ाई नहीं है। बस थोड़े दिनों में ही काम बन जाता है। इसीलिए तो सजनों बार-बार बुधवार के बोर्डों के अन्तर्गत आवाहन दिया गया हैः-

आहा मेरी ब्रह्म सत्ता हनुमान जी दे वचन करो प्रवान,

अपना आप लवो पहचान ओ मेरी ब्रह्म सत्ता

ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,

हर अन्दर ओ जापे ओ मेरी ब्रह्म सत्ता

ब्रह्म सत्ता पकड़ो इन्सान पा लवो सजनो आत्मिक ज्ञान,

ब्रह्म सत्ता हिवे हाज़रा हज़ूर निकट हिवे निवे कोई दूर।

ब्रह्म सत्ता है अजपा जाप हम तो है सारा जग प्रकाश,

ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।

ब्रह्म सत्ता है बडी महान खुद हूँ मैं आप भगवान,

ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।।

ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,

हर अन्दर ओ जापे मेरी ओ ब्रह्म सत्ता।।

सजनों इस आवाहन द्वारा आपको बार-बार ब्रह्मसत्ता को निरन्तर समरसता से ग्रहण करने के योग्य बनाने की प्रेरणा दी जा रही है। अब यहाँ ब्रह्मसत्ता क्या है? - ओ३म् आद् अक्षर। यदि हमारा ख़्याल इस आद् अक्षर के साथ समरस जुड़ा रहता है तो इस क्रिया द्वारा निरन्तर ब्रह्मसत्ता अन्दर भरपूर रह सकती है और हमें इस तथ्य की प्रतीति हो सकती हैः-

ब्रह्म सत्ता हिवे हाज़रा हज़ूर निकट हिवे निवे कोई दूर

अर्थात परब्रह्म परमेश्वर हमसे दूर नहीं अपितु बिल्कुल पास है। ऐसा होने पर सब भ्रम समाप्त हो जाएँगे और हम जीव-ब्रह्म की रमज़ जान जाएँगे। जीव-ब्रह्म की रमज़ जान गए तो जगत की रमज़ जानना कहाँ बाकी रहेगा। ब्रह्म तो फिर इस अन्तर्घट में भी व जगत में भी प्रगट रूप में निगाह आएगा यानि जो प्रकाश मन मन्दिर देखा है वही जग अन्दर निगाह आएगा। इस तरह सब वैर-विरोध, लड़ाई-झगड़े, झंझटों व तनावों से आज़ाद हो जाओगे। सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी यही कह रहा हैः-

सजनों मेरी सुन लौ बात, दुनियाँ तो राहवो आज़ाद

इस तरह

अपने असलियत स्वरूप का पाओ प्रकाश।

सजनों इतना तो स्मृति में रखकर इस पर अमल फरमा सकते हो। आप ऐसा करने में सक्षम हों इस हेतु अब ध्यान से सुनोः-

मैं तुमको पाकर, तुम हो गया

तो मेरे हर रोम से तेरा नज़र आना ठीक ही तो है ।।

अब मेरी श्रवण शक्ति सुनती है तुम्हें, मुझ को नहीं।

अब मेरी कथन शक्ति कहती है वही, जो कहते हो तुम ।।

मैं तुम को पाकर ....

मैं तो इक छोटी नदी थी, जो मिल सागर में हो गई गुम।

अब जो लोग ढूँढें मुझे, उन्हें कैसे मिलूँ ज़रा बता दो तुम।।

मैं तुम को पाकर ....

मैं तेरी अंश किरण पा, दुनियाँ में विचरता रहा।

अब वही अंश किरण, सूरज से मिल चमक उठी तो अब कैसे छुपूँ।।

मैं तुम को पाकर ....

तुम मेरी दृष्टि में आए, और आते ही ठहर गए ।

फिर तुम अपना स्वरूप जता, मुझे श्रृंगार गए ये मैं कैसे कहूँ।।

मैं तुम को पाकर ....

सर्गुण देखा तेरा और देखा तेरा निर्गुण।

निर्वाण देखा तो वहाँ ज्योतिस्वरूप थे हम ये मैं सब से कहूँ।।

मैं तुम को पाकर ....

बस इसी तरह सजनों आगे बढ़ना है। ऐसा करने से आपको समझ आ जाएगी कि मैं ही ज्योति-स्वरूप पारब्रह्म परमेश्वर हूँ। यही सत्य फिर आप सबको बता भी सकते हो। इस सन्दर्भ में जानो कि यह जगत सर्गुण है और मन-मन्दिर निर्गुण है। सर्गुण में बैहरुनी वृत्ति चलती है और निर्गुण में अन्दरुनी वृत्ति। हमें तो सर्गुण-निर्गुण दोनों में ही नहीं उलझना। हमें तो निर्वाण में, जहाँ ज्योति-स्वरूप अपना आप है वहीं स्थिर रहना है। फिर परमात्मा कहीं दूर नहीं और यह कोई लम्बी बात भी नहीं। अतः घबराओ मत, सोचो मत, बस कर डालो यानि अपनी मानसिकता को पलटकर स्थिर कर लो। सिर्फ इतना सा करने से सारा काम बन जाएगा। जानो यही विचार का सार है अतः अब विचार में आ जाना और ईश्वर है अपना आप के विचार पर खड़ हो अपना जीवन सफल बनाना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित।